भुला नहीं सकता मैं कभी दादी का रूहानी प्यार

छोटे-बड़े सबका करती सम्मान और सत्कार
सिर के ऊपर हाथ रख देती थी प्यार अपार
बहुत प्यार से पहनाती सबको बाहों का हार
भुला नहीं सकता मैं कभी दादी का रूहानी प्यार

ज्ञानी या अज्ञानी सब पर करती थी उपकार
हास्पिटल में मिलने जाती जो भी हो बीमार
मीठी दृष्टि दे जुड़वाती शिवबाबा से तार
भुला नहीं सकता मैं कभी दादी का रूहानी प्यार

मुख से सदा वरदान लुटाती और ज्ञान की धार
रमणीकता से मुरली सुनाकर करती थी श्रंगार
सत्य ज्ञान का जिसने किया नित्य प्रचार-प्रसार
भुला नहीं सकता मैं कभी दादी का रूहानी प्यार

मीठी शिक्षा द्वारा सबको करती खबरदार
यज्ञ रक्षक बन रहो ये सतगुरू की दरबार
आज्ञा पर हर कदम उठाती बन फरमानबरदार
भुला नहीं सकता मैं कभी दादी का रूहानी प्यार

एकनामी और इकानामी की थी सच्ची अवतार
जिनकी महीमा अब भी करते निराकार सरकार
दादीजी कहती थी बाबा करनकरावनहार
भुला नहीं सकता मैं कभी दादी का रूहानी प्यार

खुश रहती और खुशी लुटाती नहीं खुशी का पार
शुभ भावना सबके प्रति रखती थी शुद्ध विचार
राखी की प्रतिज्ञा याद दिलाती बारम्बार
भुला नहीं सकता मैं कभी दादी का रूहानी प्यार

होली और दीवाली चाहे कोई भी त्यौहार
पिकनिक वो खूब कराती थी भोजन की भरमार
डिपार्टमेंट का चक्र लगाने आती थी हरबार
भुला नहीं सकता मैं कभी दादी का रूहानी प्यार

निमित्त और निर्माण निर्मल बनी यज्ञ आधार
सारे विश्व का चक्र लगाया बनकर पालनहार
38 वर्ष तक बहुत सँभाला बेहद का परिवार
भुला नहीं सकता मैं कभी दादी का रूहानी प्यार

बी0के0 सत्यनारायण भाई, टोली विभाग, ज्ञान सरोवर